

अपने-अपने जंतर मंतर !

जंतर मंतर देखा जाए तो लगभग पूरे हिन्दुस्तान में देखे जा सकते हैं ह्य कुछ तो शासको द्वारा बने हुए हैं ह्य तो अनेक नेक प्रशासको द्वारा बनाए गए ह्य जंतर मंतरों के अपने-अपने मंतर जंतर हुआ करते हैं ह्य सो अपनी ढपली अपने राग बजाया करते हैं ह्य बिना इनके कोई राजधानी पूरी नहीं होती ह्य ये और बात है कि इनके नाम बदल जाते हैं ह्य फिर भी इन स्थानों पर खास मंतर फ़िराए जाते हैं और अपने-अपने जंतर भी सिराए जाते हैं।

बतौर शासक महाराजा जय सिंह द्वितीय ने सन सतरह सौ के करीब दिल्ली में जो जंतर मंतर बनवाया था ह्य आज ठीक उसके बगल के स्थान विशेष को भी जंतर मंतर कहा जा रहा है ह्य यह क्षेत्र अद्वीतीय जंतर मंतर बन गया है ह्य जहां भारी तादात में युवा हुंकार भरने लगे हैं ह्य इन्हें ही जेन-जी कहा जाता है ह्य देखा जाए तो ये अपने-अपने जंतर मंतर लिए हुए जुड़ा करते हैं ह्य इन्हें रोकने को दुनियाभर के बेरिकेटस मतलब अवरोधकों का दिन-रात जमावड़ा लगा रहता है ह्य सो यहां सरकारी और गैर-सरकारी सुरक्षा कर्मियों का जाल फ़ैला दिखेगा ही ह्य जो यह बतलाने के लिए पर्याप्त हैं कि ऊपरवालों के पेट का पानी तक हिल गया है ह्य हिले हुए भी ये अंदर खाने जन्तर मंतर बने हुए हैं ह्य अजब राजनीति है तो गज़ब इसकी रण रीतियाँ।

कभी कनाट पैलेस को बोलने में पुराने लोगों को बड़ी दिक्कत होती थी ह्य क्नाट पैलेस बोलें या कनात पिलेस, उनकी समझ से परे की बात हुआ करती थी ह्य तब सुविधा अनुसार इसे रीगल पुकारते थे या प्लाज़ा ह्य बाद में युवाओं ने सी.पी. कहना शुरु कर दिया ह्य आज सी.पी. अपनी जगह है ह्य पर जंतर मंतर प्रमुख केंद्र बिंदु हो गया है ह्य इस बदलते समय में और वक्त के चढ़ते तेवरों ने बहुत कुछ सीखने को दिया है ह्य वैसे भी जब शासक-प्रशासक कोरा प्रकाशक बनने लगता है तब जरुरी बदलाव दिखने लगते हैं ह्य बल्कि बदलाव होते हैं ह्य इतिहास गवाह है कि बड़े से बड़ा जिद्दी राजा तक एक दिन अपने से ही मजबूर हुआ करते हैं ह्य जंतर मंतर कभी अपने अर्थ एक से नहीं रखता ह्य तेज़ प्रकाश में आंखें मिचमिचाया करती हैं, यह तो सभी जानते हैं ह्य लगता है इस रोशनी के जंतर मंतर को आज युवा भलिभाँति समझ गए हैं ह्य लग रहा है कि देर से समझने वाले अभी हलके में ले रहे हैं ह्य कहावत सही लग रही है कि सोए हुए राजा के हलक को जब तलक हिलाया न जाए, वह सोता ही रहता है।

जंतर मंतर के आज मतलब बदले हुए हैं ह्य यहां जो भी राष्ट्रभक्त जुट रहे हैं या जिनके विरुद्ध हुंकार भरी जा रही है ह्य उन सबको शायद ये पता भी न हो कि पहले ऐसी रौनक कभी कहीं और हुआ करती थी ह्य शायद ये लोग तब पैदा भी न हुए हों ह्य पुराने जानकार बताया करते हैं कि दिल्ली के कृषि-भवन की नहर है इस मुहाने पर बोट-क्लब वह स्थान होता था ह्य जहां आम जनता के जंतर मंतर जुटा करते थे ह्य तब एक ही नारा चला करता था- चलो, भइया ! बोट क्लब, चलो ह्य तब जनता चलती थी और अपनी एक आवाज़ से चलाती थी ह्य आज चलाने वाले अपनी चला रहे हैं और ये जनता मचल रही है ह्य कहने वाले कह भी रहे हैंङ्क पहले कर्म चलता था अब धर्म चलता है ह्य मर्म बेचारा इत्ता लचीला हो गया कि इसे शर्म से जोड़ लो या किसी के धर्म से ह्य कोई फ़र्क नहीं पड़ता ।

जंतर मंतर आज की तारीख में कोई एक नारा नहीं अपितु एक जिंदा मुहावरा हो गया है ह्य एक तरह से बे-लिखी बड़ी घोषणा भी बन चुका है ह्य तभी तो अलग-अलग जंतर मंतर वाले एक ही मंच पर साझा हो रहे हैं ह्य साझा चूल्हा एक साथ रोटी सेकना तो सिखा दिया करता है ह्य पर अपने-अपने मन के भेद भुलाना नहीं आ रहा ह्य एक ये जंतर मंतर है जहां आकर हर शख्स एकता में तर दिखता है ह्य पर अपने से इतर ह्य वाह रे ! जंतर मंतर, इन दोनों के अंत मेंङ्क तर।

विपम
मोब. 859547 8586

'मैं हूंन' बनाम 'दिल मांगे मोर, वन भूमि पर आमने-सामने दो डायलॉग!

इंदौर। वन भूमि से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई ने मध्यप्रदेश में दो चर्चित डायलॉग के बीच सियासी और प्रशासनिक टकराव की नई कहानी खड़ी कर दी है। एक तरफ केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का भरोसा दिलाने वाला संवाद– 'मैं हूं ना', तो दूसरी तरफ वन विभाग के गलियारों में पीसीसीएफ मनोज अग्रवाल से जोड़ा जाने वाला जुमला–'दिल मांगे मोर'।



लाड़कुई में आदिवासी परिवारों की बेदखली के बाद इन दोनों संवादों के मायने फिर चर्चा में हैं। जब भी वन भूमि से आदिवासी परिवारों को हटाने की कार्रवाई होती है, शिवराज सिंह चौहान का उनके बीच पहुंचकर उन्हें भरोसा दिलाना उनकी राजनीतिक शैली का हिस्सा रहा है। इस बार सीहोर वन मंडल के लाड़कुई क्षेत्र में बेदखली की कार्रवाई के बाद उनका भोपाल पहुंचकर मामले में दखल देना इस मुद्दे को और महत्वपूर्ण बना रहा है। सवाल है कि वन भूमि से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई और वर्षों से वहां रह रहे परिवारों के पुनर्वास के बीच संतुलन कैसे बनेगा? दूसरी ओर, वन विकास निगम के प्रबंध संचालक मनोज अग्रवाल की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं।

आदिवासियों की बेदखली पर शिवराज सिंह चौहान मैदान में, वन विकास निगम के एमडी मनोज अग्रवाल की भूमिका पर उठे सवाल

विभागीय हलकों में उनके साथ जोड़े जाने वाले 'दिल मांगे मोर' संवाद को अतिक्रमण हटाने के अभियानों में मैदानी अधिकारियों का उत्साह बढ़ाने वाली कार्यशैली के रूप में याद किया जाता है। अब लाड़कुई में बेदखली की कार्रवाई को लेकर उनके नेतृत्व और जवाबदेही पर चर्चा तेज है। टकराव का असली सवाल डायलॉग का नहीं, जवाबदेही का है।

यदि वन भूमि से अतिक्रमण हटाना कानूनन जरूरी है, तो कार्रवाई की प्रक्रिया, प्रभावित परिवारों के अधिकार और पुनर्वास की व्यवस्था भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। वहीं, यदि किसी कार्रवाई पर राजनीतिक स्तर से हस्तक्षेप होता है, तो उसके पीछे के तथ्य भी सामने आने चाहिए। फिलहाल 'मैं हूं न' और 'दिल मांगे मोर' की चर्चा के बीच निगाहें इस बात पर हैं कि लाड़कुई के आदिवासी परिवारों को राहत मिलती है या बेदखली का विवाद और गहराता है।

विधानसभा -4 के विश्रामबाग स्विमिंग पूल को पीपीपी मॉडल पर देने का कांग्रेस ने किया विरोध

इंदौर। विश्रामबाग के नवनिर्मित स्विमिंग पूल को पीपीपी मॉडल पर देने के प्रस्ताव के विरोध में इंदौर शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्री चिंटू चौकसे के निर्देशानुसार, संगठन महामंत्री श्री संजय बाकलीवाल एवं विधानसभा-4 प्रभारी श्री शैलेष गर्ग के नेतृत्व में विश्रामबाग के मुख्य द्वार पर विशाल धरना दिया गया।



ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष श्री जतिन थोरात, महामंत्री श्री अभिजीत शर्मा एवं वरिष्ठ नेता श्री सुधीर सेठिया सहित कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि जनता के पैसों से बनी सार्वजनिक सुविधा पर जनता का अधिकार सर्वोपरि है। कांग्रेस ने मांग की कि प्रस्ताव, निविदा की शर्तें एवं शुल्क व्यवस्था सार्वजनिक की जाए तथा प्रस्ताव तत्काल वापस लिया जाए।

कांग्रेस ने चेतावनी दी कि सात दिनों में प्रस्ताव वापस नहीं हुआ तो चरणबद्ध आंदोलन किया जाएगा।

आभार कार्यवाहक अध्यक्ष देवेंद्र सिंह यादव ने माना,इस धरने में मुख्य रूप से पार्षद सादिक खान, लोकेश सोलंकी,प्रकाश पटेल, अंकित धवन, मित्रा भाटिया, गुरजोत सिंह गिल, सुनील पाल, रविकांत मिश्रा, धर्मेंद्र बड़े, नकुल पाटोदी, गोपाल दरयानी, अशोक राठौड़, इम्तियाज बेलिम, मनीष मिण्डा,श्रीमती सरिता काला,विकास जोशी,आशीष लाहोटी,यशपाल गहलोत, जगदीपेंद्र यादव, संजय मालवीय, मुकेश बड़के, धर्मेंद्र ठाकुर, नितिन जोशी, ईशान गुप्ता, रामपाल (समाजसेवी),अरुण माहेश्वरी, सोनू पावले, चिंटू वर्मा, राजेश गावडे, राहुल हतुनिया, विमल साहू, सुरेश वर्मा, अमन करोड़ें, मधु गुप्ता, अंकित साहू, नर्सिंग कुंडेलवाल, धर्मेंद्र जैन, मुन्ना लाल यादव, राजा वानखेडे, सुबोध पांडे,सोहन भाई, सुरेंद्र रोहिया, पप्पू गोटिया, गणेश कंधारे, वरुण गंधारे ,विजय यादव, गंगेश हटकर, विजय थाब्रेरे आदि अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मालव कन्या स्कूल की प्राचार्य बबीता हयारण ने इंदौर बीईओ का पदभार ग्रहण किया



इंदौर – शासकीय मालव कन्या हायर सेकंडरी मोती तबेला की प्राचार्य श्रीमती बबीता हयारण ने सोमवार को इंदौर बीईओ का पदभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण के पश्चात् शाम को श्रीमती हयारण मैडम का पुरानी पेंशन बहाली संघ के जिलाध्यक्ष दिनेश परमार की अगुवाई में शिक्षकों ने गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया वहीं मध्यप्रदेश व्यायाम संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग तिवारी ने चुनड़ी ओड़ाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर पुरानी पेंशन बहाली संघ के जिलाध्यक्ष एवं शिक्षक संघ के प्रदेश मीडिया प्रभारी दिनेश परमार, व्यायाम संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग तिवारी सहित राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष शिववीर सिंह भदौरिया, अनीता भारती,प्रदीप उपाध्याय, खजान सिंह चौहान,सुनंदा महाजन,नवनीत गोयल, राकेश गेहलोद, रश्मि बिछोरे, वंदना बघेल,देवकुवर कवचे, मंजुला शर्मा आदि सहित अनेक शिक्षक उपस्थित थे।

प्रतिभा अनिल भोसले के देहदान से कितनों की ही खिल जाएगी प्रतिभा



इंदौर। सोमवार को ईश्वर की कृपा से गोयल एवेन्यू इंदौर निवासी 68 वर्षीय महिला स्व.श्रीमती प्रतिभा अनिल भोसले का देहदान मानसरोवर आयुर्वेदिक कॉलेज भोपाल,आई डोनेशन एम के इंटरनेशनल आई बैंक इंदौर और स्कीन डोनेशन चोइथराम स्किन बैंक इंदौर में संपन्न हुआ।

समन्वय सेवा प्राप्त-इस पुनीत कार्य में दिवंगत के पति रोटेरियन श्री अनिल भोसले एवं रोटेरियन तरुण मिश्रा की समन्वय सेवा प्राप्त हुई। दिवंगत के सम्मान में गार्ड ऑफ ऑनर-अंतिम विदाई के समय डोसी की पहल पर क्रियान्वयन स्वरूप मध्यप्रदेश शासन द्वारा जारी आदेशानुसार दिवंगत के सम्मान में इंदौर पुलिस दल द्वारा शासकीय सम्मान गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया।

कार्टून कोना



हे मां ! इन्हें माफ करना

नवरात्रि में भी खुली रहीं मांस-मटन की दुकानें

चल समारोह मार्ग पर दुकानें संचालित होने से श्रद्धालुओं में नाराजगी, हाउसिंग बोर्ड और आईसर चौराहे के पास करीब 25 दुकानों के खुले रहने का दावा; जिम्मेदारों की निगरानी पर उठे सवाल

पीथमपुर। एक ओर मां दुर्गा की आराधना, जयकारों और चल समारोह के साथ शहर नवरात्रि के रंग में रंगा रहा, वहीं दूसरी ओर मांस-मटन की दुकानें खुली रहने को लेकर विवाद खड़ा हो गया। स्थानीय लोगों का आरोप है कि जिन मार्गों से मां दुर्गा का चल समारोह निकला, उन्हीं मार्गों पर मांस-मटन की दुकानें संचालित होती रहीं। हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी और आईसर चौराहे के आसपास दुकानें खुली रहने की जानकारी सामने आने के बाद नगर पालिका और प्रशासन की व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं।



स्थानीय लोगों के अनुसार, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी और आईसर चौराहे के पास करीब 25 मांस-मटन की दुकानें खुली थीं। नवरात्रि के दौरान धार्मिक आयोजनों और चल समारोह को देखते हुए दुकानों के संचालन को लेकर स्पष्ट व्यवस्था की अपेक्षा की जा रही थी।

इसके बावजूद दुकानें खुली रहने से कई लोगों ने नाराजगी जताई। मामले को लेकर अब यह सवाल उठ रहा है कि यदि दुकानदारों के लिए कोई दिशा-निर्देश जारी किए गए थे, तो उनका पालन सुनिश्चित कराने के लिए क्या कदम उठाए गए?

चल समारोह के मार्ग पर दुकानें खुली रहने से नाराजगी

नवरात्रि के दौरान पीथमपुर के विभिन्न क्षेत्रों में मां दुर्गा की प्रतिमाएं स्थापित की गई और चल समारोह निकाले गए। श्रद्धालु ढोल-ढमाकों और जयकारों के साथ मां का स्वागत करते रहे।

इसी बीच चल समारोह मार्ग के आसपास मांस-मटन की दुकानें खुली रहने की बात सामने आई। स्थानीय लोगों का कहना है कि धार्मिक आयोजन के दौरान इस तरह की स्थिति से श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत हुईं।

लोगों ने सवाल उठाया कि त्योहार से पहले यदि संबंधित दुकानदारों को कोई निर्देश दिए गए थे, तो प्रशासनिक अमले ने मौके पर जाकर निगरानी क्यों नहीं की।

स्थानीय स्तर पर यह भी कहा जा रहा है कि संबंधित दुकानों को लेकर पहले भी विवाद की स्थिति बन चुकी है। हालांकि, पूर्व के मामलों और वर्तमान घटना के संबंध में आधिकारिक जानकारी सामने आना बाकी है।

नगर पालिका और प्रशासन की निगरानी पर सवाल

स्थानीय लोगों का दावा है कि नवरात्रि शुरू होने से पहले मांस विक्रेताओं को दुकानों के संचालन को लेकर दिशा-निर्देश दिए गए थे। इसके बावजूद दुकानें खुली रहने की शिकायतों ने नगर पालिका और पुलिस प्रशासन की निगरानी पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

हालांकि, संबंधित निर्देशों की लिखित प्रति, उनकी शर्तों और उल्लंघन पर की गई कार्रवाई का विवरण अभी सामने नहीं आया है। ऐसे में प्रशासन की ओर से स्थिति स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि दुकानों के संचालन को लेकर क्या निर्देश जारी किए गए थे और उनका पालन कराने के लिए क्या व्यवस्था की गई थी।

हिंदू संगठन ने जताई नाराजगी

मामले को लेकर हिंदू संगठन के पदाधिकारी धीरेंद्र रघुवंशी ने नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि नवरात्रि जैसे धार्मिक पर्व के दौरान श्रद्धालुओं की भावनाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। उनके अनुसार, चल समारोह के मार्ग पर मांस-मटन की दुकानें खुली रहने से लोगों में नाराजगी पैदा हुई है।

अब इस मामले में नगर पालिका और पुलिस प्रशासन की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण होगी। संबंधित अधिकारियों की ओर से जारी निर्देशों, निरीक्षण और कार्रवाई की जानकारी मिलने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि दुकानों के संचालन को लेकर निर्धारित व्यवस्था का पालन हुआ था या नहीं।

कटाक्ष

अच्छे दिन

जब
पढ़े लिखे लोग
रिक्शा
और कम पढ़े
देश चलाते हैं
तभी
अच्छे दिन आते हैं

जब योग्य लोग
मूर्खों के आगे
सर झुकाते हैं
तभी
अच्छे दिन आते हैं

जब
साधु संत जेल में
और अपराधी
खुले आम
घूमते नजर आते हैं
तभी
अच्छे दिन आते हैं

जब
पीड़ित सताए जाते हैं
और बलात्कारी
सम्मान पाते हैं
तभी
अच्छे दिन आते हैं

हम सौभाग्यशाली हैं
हमें प्रभु कृपा
प्राप्त हो गई है
अच्छे दिनों की
शुरुआत हो गई है।



डॉ पुनीत कुमार
मुरादाबाद 244001